

॥ अहोई अष्टमी व्रत का महत्व ॥

॥ जय अहोई माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संतान के मंगल का पर्व ॥

अहोई अष्टमी मातृस्नेह और संतान के कल्याण की कामना से जुड़ा व्रत है। उत्तर भारत में अनेक माताएँ इस दिन अहोई माता की आराधना करती हैं। बच्चों की दीर्घायु, सुख और अच्छे जीवन की प्रार्थना इस परंपरा का मुख्य भाव है।

अष्टमी तिथि का संबंध

उत्तर भारत के पूर्णिमांत पंचांग में यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को आता है। अमांत गणना में इसी अवसर को आश्विन कृष्ण अष्टमी कहा जाता है। यह पर्व करवा चौथ के कुछ दिन बाद और दीपावली से पहले मनाया जाता है। इसे अहोई आठें भी कहते हैं।

अहोई माता की आराधना

लोकपरंपरा में अहोई माता को देवी पार्वती का मातृरूप माना जाता है। उनके पूजन में संतान के पालन-पोषण और संरक्षण की भावना व्यक्त होती है। चित्र में स्याहु और उसके बच्चों की उपस्थिति मनुष्य के साथ अन्य जीवों के जीवन का भी स्मरण कराती है।

बेटे और बेटियों के लिए समान प्रार्थना

कई पुरानी कथाओं में पुत्रों का उल्लेख मिलता है। आज अनेक परिवार अहोई का व्रत अपनी सभी संतानों के कल्याण के लिए रखते हैं। पर्व का स्नेहपूर्ण भाव बेटे और बेटी दोनों के लिए समान सम्मान, सुरक्षा और अवसर की कामना में प्रकट हो सकता है।

व्रत धार्मिक आस्था की अभिव्यक्ति है। इसके फल को संतान के स्वास्थ्य, आयु या भविष्य की निश्चित गारंटी के रूप में न समझें।

॥ करुणा, संस्कार और परिवार ॥

जीव-दया का संदेश

अहोई की कथा में छोटे जीव को अनजाने में लगी चोट का प्रसंग मिलता है। यह हमें काम करते समय सावधानी रखने और दूसरे प्राणियों के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देता है। अपने बच्चों के साथ पशु-पक्षियों की रक्षा और प्रकृति के सम्मान की सीख भी साझा की जा सकती है।

पीढ़ियों के बीच जुड़ाव

परिवार के बड़े जब कथा सुनाते हैं तो नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक परंपरा से परिचित होती है। एक साथ पूजा करना, प्रसाद बाँटना और शुभकामनाएँ देना परिवार में अपनापन बढ़ाने का अवसर है। बच्चों को कथा का भाव सरल भाषा में समझाएँ और उनके प्रश्न सुनें।

श्रद्धा के साथ जिम्मेदारी

संतान के मंगल की प्रार्थना को रोजमर्रा की देखभाल से जोड़ना उपयोगी है। बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा, भावनाओं और आवश्यक उपचार पर ध्यान देना पूरे परिवार की साझा जिम्मेदारी है। माता की भक्ति का सम्मान उसके आराम और सहयोग की आवश्यकता का सम्मान करने में भी है।

सेवा और सद्भाव

अपनी सामर्थ्य से भोजन, वस्त्र या पढ़ाई की सामग्री देकर जरूरतमंद बच्चों की सहायता की जा सकती है। दान में दिखावे के स्थान पर सम्मान और उपयोगिता को महत्व दें। किसी का परिवार अलग परिस्थिति में हो तो उसकी भावनाओं का ध्यान रखें।

हे अहोई माता! हमारे घरों में प्रेम और संतोष बनाए रखें। सभी बच्चों को स्नेह मिले और हम उनकी देखभाल सजगता से कर सकें।

॥ जय अहोई माता ॥